दिनांक :- 18-04-2020
कालेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा
स्नातक :- प्रथम खंड कला
विषय :- इतिहास प्रतिष्ठा
लेखक का नाम :- डा० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)
इकाई - दो पत्र - एक
अध्याय :- सिंधु घाटी सभ्यता के जाति और विशेषता

यहाँ मुख्यतः चार प्रजातियों के लोग रहते थे :-

(1) भूमध्यसागरीय (2) प्रोटो आस्ट्रेलॉयड

(3) मंगोलाइड (4) अल्पाइन

यहाँ पर निग्रो प्रजाति के लोग नहीं थे।

स्त्री मृणमूर्तियों की संख्या देखते हुए अनुमान किया जाता है कि सिंधु सभ्यता का समाज मातृ सत्तात्मक था।

हड़प्पा के श्रमिक आवास (कुलीलाइन) के आधार पर व्हीलर दास प्रथा का अस्तित्व मानते है।

इस सभ्यता में मुख्यतः ऊनी तथा सूती वस्त्र प्रचलित थे।

Scanned with CamScanner

अनाजो के अवशेष तथा घरो के अंदर पाई गई जानवरो की हड्डियो के आधार पर भोजन के मांसाहारी तथा शाकाहारी दोनो तरह के होने के संकेत मिलते हैं।
यहाँ के लोगो के वस्त्र सादे तथा कढ़ाईदार दोनो होते थे। मोहनजोदड़ो की प्रसिद्ध योगी की मूर्ति में तिपूतिया साल, कढ़ाई का उत्तम उदाहरण है।
हड़प्पा में एक बोतल मिली है जिसमे काजल के साक्ष्य मिलते हैं। इसके अलावा चान्हुदड़ो से लिपिस्टिक तथा धौला वीरा से मिट्टी का कंघा भी प्राप्त हुआ है।
यहं से तांबे तथा कांसे के बने उस्तरे भी मिले है जिससे ज्ञात होता है कि पुरुष दाढ़ी भी बनाते थे, यद्यपि दाढ़ीयुक्त मृणमूर्ति के साक्ष्य भी मिले है।
मोहनजोदड़ो से चाँदी की बनी अंडाकार चूड़ियाँ मिली है। इस से ज्ञात होताहै कि महिलाएँ चूड़ियो का प्रयोग करती थी।

मनोरंजन के साधन

मछली पकड़ना, शिकार करना, पशु पक्षियो को आपस में लड़ाना, चौपड़ और पासे खेलना।

Scanned with CamScanner

मोहनजोदड़ो में ईंटों से बने दो अधूरे गेमबोर्ड प्राप्त हुए हैं लोथल से कुत्ता, मेढ़ा, बैल, आकृतिवाली गोटियाँ मिली हैं मिट्टी गाड़ी से भी शायद खेला जाता था (हड़प्पा) यहाँ से ऊँचे दर्जे के संशक्लिस्त खिलौने भी मिले हैं जैसे तार पर चढ़ने-उतरने वाला बंदर, सिर हिलाने वाला बैल पहिये पर भेड़ इत्यादि।

मोहनजोदड़ो में एक ऐसे पुरुष का चित्र है जो ढोल लिये हुए है। साथ ही वीणा के साक्ष्य लिपि के माध्यम से मिले हैं मोहनजोदड़ो में प्रहसन मुद्रा में एक ऐसे पुरुष का अंकन मिला है जिसका चेहरा किसी पुरुष का, कान किसी जानवर का तथा पूंछ बंदर की है।

आर्थिक जीवन

सभी बड़े नगरों में पाये गए अन्नागार, अनेक प्रतिच्छेदों वृत वाला जार, हड़प्पा से प्राप्त अनाज रखने की खत्तियाँ से इस सभ्यता के व्यापक कृषि कार्य की जानकारी मिलती है सिंधु एवं सहायक नदियों द्वारा प्रति वर्ष लाई गई जलोढ़

मिट्टियों से निर्मित मैदान में जुताई द्वारा खेती की जाती थी जिसमें हल तथा नुकीले कुदाल का प्रयोग होता था।

कृषि कार्य में कांसे तथा पत्थर के उपकरणों का प्रयोग होता था यद्यपि कालीबंगा में प्राक् हड़प्पा काल के जुते हुए खेत मिले हैं परंतु हड़प्पा युग के फाल नहीं मिले हैं।

मोहनजोदड़ो तथा बनवाली में मिट्टी से निर्मित हल के साक्ष्य मिले हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सिंधु सभ्यता के हल लकड़ी से निर्मित होते थे।

हड़प्पा सभ्यता में सामान्यतः नवम्बर में फसल बोयी जाती थी और अप्रैल में काटी जाती थी।

सर्वप्रथम कपास की खेती सिंधु सभ्यता में ही प्रारंभ हुई इस लिये इसे यूनानी लोग सिण्डन भी कहते थे।

पेड़, पौधों में पीपल, खजूर, नीम, नींबू तथा केला उगाने के साक्ष्य मिलते हैं।

महत्वपूर्ण फसलें

गेहूं की दो या तीन प्रजातियां प्रचलन में थीं:-

(1) ट्रीटीकम कम्पेक्टम (2) स्फेरीकोकम

जौ की दो प्रजातियाँ थी :-

(1) हौरडियम वल्गैर (2) हेक्सास्टिकम

मटर की ब्रंसिका जूसी नामक प्रजाति होती थी।

रागी की फसल उत्तर भारत के किसी भी स्थल से प्राप्त नही हुई है।

चावल की खेती गुजरात के तथा संभवतः राजस्थान में होती थी। लोथल एवं रंगपुर से मृण मूर्ति में धान की भूसी लिपटी मिली है।

पशुपालन

पशुपालन सिंधु सभ्यता के आर्थिक जीवन का महत्वपूर्ण आधार था। कृषि, परिवहन, विपणन तथा भोजन के लिये पशुओं को पाला जाता था।

कूबड़वाले तथा बिना कूबड़वाले बैल, भैंस, गाय, भेड़, बकरी, कुत्ते, गधे, खच्चर और सुअर आदि प्रमुख पालतु पशु थे। गुजरात के लोग हाथी पालते थे। एकशृंगी पशु की भी खास महत्व था। व्याघ्र का अंकन सिर्फ सिंध प्रदेश के स्थलों में ही हुआ है। परंतु सिंध से बाहर मात्र कालीबंगा की मुहर पर

बाघ का चित्रण मिलता है।
सिंधु सभ्यता की मुहर पर सिंह का चित्रण नही मिलता है
जबकि मेसोपोटामिया की मुद्रा पर मिलता है।
सिंधु सभ्यता की मुहरों पर ऊँट तथा घोड़े का भी चित्रण
नही है तथापि कालीबंगा से ऊँट की हड्डियाँ तथा लोथल
से घोड़े का जबड़ा मिला है। राणा-घुंडई के निचले स्तर
से घोड़े के दाँत के अवशेष मिले हैं
शिल्प एंव उद्योग:- मिट्टी एंव धातु के बर्तनों के निर्माण
के साथ मनके और मुहरो का निर्माण प्रमुख शिल्प था।
बर्तन चाक तथा हाथ दोनो से बने होते थे जिस पर लाल
रंग होता था। इस पर काली पट्टी से पुष्पाकार ज्यामिती
इसके अलावा मिट्टी से ईंट का निर्माण भी प्रमुख शिल्प था।
शंख, सीप, तथा हाथी दाँत से भी विभिन्न वस्तुओं का निर्माण
किया जाता था।
चान्हुदड़ो एंव लोथल से मनका बनाने का कारखाना मिला है।

Scanned with CamScanner

हड़प्पा सभ्यता के लोग, गोमेद, फिरोजा, लाल पत्थर तथा सेलखड़ी तथा सोने एवं चाँदी जैसे बहुमूल्य एवं अर्द्ध कीमती पत्थरों से सुन्दर मनके का निर्माण करते थे।
बालकोट तथा लोथल से सीप उद्योग मिला है।

मुहर
सिंधु सभ्यता में लगभग 2500 मुहरें प्राप्त हुई है जो प्रायः आयताकार या वर्गाकार है।
वर्गाकार मुहर पर पशु के साथ लिपि उत्कीर्ण है जबकि आयताकार मुहर पर केवल लिपि ही उत्कीर्ण है। अधिकांश मुहरें सेलखड़ी से निर्मित होती थी। कुछ मुहरें हाथी दाँत से भी बनती थी

इन मुहरों का प्रयोग दो तरह से होता था।
(1) सिक्कों की तरह
(2) संभवतः उच्च वर्ग के लोग अपनी वस्तुओं की पहचान के लिए इनका प्रयोग करते थे।

इन मुहरों पर एक शृंगी पशु, बैल, बाघ, बकरी आदि है।

Scanned with CamScanner